बिछुड़ने लगे तो रोने न दिया

✻ नीरज तिवारी, द्वितीय सचिव, भारतीय राजदूतावास, विराटनगर

शांतिवन (आबू रोड़) में आयोजित पांच दिवसीय राजयोग शिविर (20-25 मई, 2013) का लाभ लेने का स्वर्णिम अवसर मुझे मिला। मेरा परम सौभाग्य है कि जीवन को नया रास्ता और नई दिशा मिल गयी है। यह एक ऐसा अनुभव है जिसे सबके साथ बांटना चाहता हूँ।

अज्ञानता अंधकार है। लौकिक ज्ञान द्वारा हम पशु से मानव बनने का प्रयास करते हैं तथा ईश्वरीय ज्ञान द्वारा हम मानव से महामानव या श्री लक्ष्मी और श्री नारायण समान भी बन सकते हैं। आबू पर्वत शिव बाबा का पवित्रतम् तीर्थ-स्थल है जहां प्राप्त ईश्वरीय ज्ञान, जीवन को मधुर रस से भर सकता है। इस प्रकार यह तीर्थ अन्य तीर्थ-स्थलों से भिन्न है। वहाँ तो हम योजनाबद्ध रीति से प्रियजनों के साथ जाते हैं। तीर्थ-स्थल पर पहुँच कर, नहा-धोकर, प्रसाद खरीद कर, लंबी पंक्ति में लग जाते हैं। समय आने पर मूर्ति के दर्शन कर गद्गद् हो जाते हैं। छवियाँ लेते हैं तथा मोटी रकम दान-पात्र में डालकर निश्चिंत हो जाते हैं कि हमने धर्म का काम किया तथा हमारे पाप भी कम हो जायेंगे। प्रसाद लेकर वापस आ जाते हैं और परिजनों में बांट देते हैं। प्रश्न यह है कि हमने पाया क्या? हमें धार्मिक अथवा आध्यात्मिक रूप से क्या प्राप्त हुआ?

इसके विपरीत शांतिवन में एक सुनियोजित तरीके से स्वयं की पहचान, परमसत्ता की पहचान, सकारात्मक सोचने की कला, तनावमुक्त जीवन जीने की कला का ज्ञान प्राप्त हुआ। काल-चक्र, अनादि विश्व नाटक, कर्मों की गहन गति का दर्शन प्राप्त हुआ। खुशी में रहने तथा खुशी बांटने, शांति द्वारा शक्ति की अनुभूति तथा आत्मशक्ति अर्जन करने का मार्ग पाया। पिताश्री ब्रह्मा की जीवन कहानी सुनने को मिली जिन्होंने भारत वर्ष को ज्ञान का मार्ग दिया। राजयोग का अभ्यास भी कराया गया। आत्मचिंतन पर ज़ोर दिया गया क्योंकि आत्मचिंतन से आत्म परिवर्तन तथा आत्म परिवर्तन से विश्व परिवर्तन सम्भव है। आत्मचिंतन से वस्तुतः सृजनात्मक चेतना आती है।

ब्रह्माकुमारीज़ के शान्तिवन परिसर के डायमंड हाल में चार दिनों तक निरंतर ज्ञानामृत की वर्षा होती रही। इस में नहाकर शरीर तथा आत्मा सशक्त हो गयी तथा लगने लगा कि जीवन नया मोड़ ले रहा है। ज्ञान अर्जन करने के पश्चात् मुझे लगा

कि डायमंड हाल का नाम सत्यम् शिवम् सुन्दरम् दर्शनम् डायमंड हाल होना चाहिए।

धन्य है आबू पर्वत जहाँ आधुनिक भारत के निर्माताओं – ज्ञानयोगी विवेकानन्द, कर्मयोगी महात्मा गांधी तथा राजयोगी प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के सपनों को साकार किया जा रहा है तथा मानवीय, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों द्वारा स्वर्णिम भारत वर्ष का निर्माण किया जा रहा है। धन्य हैं राजयोग सिखाने वाली ब्रह्माकुमारी बहनें। वे परमात्मा शिव की पवित्रतम् शक्तियाँ हैं जो परमपिता शिव के नाम को दूर-दूर तक फैला रही हैं। इस कलयुगी दुनिया में जहां मूल्यों, मानवता तथा सदाचार का ह्रास हो रहा है, वे निरन्तर प्यार, शांति और सद्भावना का संदेश दे रही हैं। अपना सब कुछ शिव बाबा पर न्योछावर कर सदाचार का आचरण करने का आह्वान कर रही हैं। ऐसा

राजयोग द्वारा ही संभव है। वे इस पृथ्वी पर सतयुग लाने के लिए प्रतिबद्ध हैं और पूर्ण रूप से आशावादी हैं इस पुण्य काम को पूरा करने के लिए। हमें कह रही हैं कि हम उच्च विचारों, पवित्र आचरण तथा सत्कर्मों द्वारा सतयुग के लिये तैयार रहें। बहनों की प्रशंसा करना सूर्य को रोशनी दिखाने जैसा होगा।

पुण्यस्थली शांतिवन में ज्ञान अर्जन के साथ-साथ शिव बाबा से भी मेरी बात चलती रही। पच्चीस मई को बाबा के प्रति एक कविता लिखी जो इस प्रकार है–

आज रात बाबा ने मुझे सोने न दिया,
जब बिछुड़ने लगे तो रोने न दिया।
जाने को कहा, रुकने न दिया,
फिर आने को कहा, इतना वादा तो किया।
अपनी महफिल में शुमार होने तो दिया,
अपना बनाने का वादा भी किया।
न भुलाने का वचन भी दिया,
जब चलने लगा तो हाथ थाम भी लिया।।

मिला खुदा दोस्त का साथ

जब मैं आठ वर्ष की थी तब राजापार्क (जयपुर) सेवाकेन्द्र से मुझे ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त हुआ और उसी दिन मैंने शिवबाबा को अपना बेस्ट फ्रेन्ड बना लिया। बाबा हमेशा दोस्त के रूप में साथ देते हैं। मैं रोज अमृतवेले योगाभ्यास करती हूँ। बिना बाबा की याद के जो पढ़ती हूँ वो याद भी देरी से होता है और उसे जल्दी ही भूल जाती हूँ। बाबा की याद में जो पढ़ती हूँ वह जल्दी ही याद हो जाता है और हमेशा याद रहता है। छुट्टी के दिन सुबह मुरली क्लास में जाती हूँ, स्कूल में जाती हूँ तो शाम को मुरली क्लास करती हूँ। रोज मुरली की प्वाइंट नोट करती हूँ, बाबा को पत्र लिखती हूँ, स्वमानों का अभ्यास करती हूँ और तीन अव्यक्त मुरली पढ़ती हूँ।

भाषण, पोस्टर, तीन कि.मी.की मैराथन, पेन्टिंग, कविता पाठ, वाद-विवाद, राइटिंग, क्विज तथा निबंध लेखन जैसी कई प्रतियोगिताओं में मैंने भाग लिया है और बहुत उपहार प्राप्त किये हैं। कक्षा में सबकी मदद करती हूँ, बुरे संग से सदा दूर रहती हूँ। खाली समय में लड़कियाँ एक-दूसरे की बुराई करती हैं और मैं ज्ञानामृत पढ़ती हूँ। कक्षा में सदा प्रथम आती हूँ। आज तक मैंने 5 ट्राफी, 2 शील्ड, 1 मेमेन्टो, कुल 3680 रुपये कैश, 17 सर्टिफिकेट, 4 उपहार तथा कई किताबें इनाम में पाई हैं। ये सब प्राप्त हुए सिर्फ बाबा के साथ से। बाबा के बिना मुश्किल था लेकिन बाबा के साथ से सबकुछ आसान हुआ।

एक बार मेरी वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय था ''तीर्थ यात्राएं धार्मिकता का प्रमाण हैं''। इसके विपक्ष में मैंने चार पेज का मैटर बोला। वो भी कोई इन्टरनेट से निकाल कर नहीं बल्कि बाबा की अव्यक्त मुरली (वृक्षपति द्वारा कल्प वृक्ष की देखरेख) से, ज्ञानामृत के एक लेख से और ब्र.कु.बहन की क्लास से तैयार किया था। कुल 80 बच्चों ने प्रतियोगिता में भाग लिया था। उन्होंने मैटर इन्टरनेट से तैयार किया था। मेरे मन में यह प्रश्न नहीं था, मैं जीत पाऊँगी या नहीं। बस, बाबा को याद किया और बिना घबराहट के बोल दिया। मन में इतना विश्वास था कि बाबा मेरे साथ हैं और होगा वही जो ड्रामा में नूँध है और मैं जीत गई। मुझे खूब प्रशंसा के साथ-साथ एक सर्टिफिकेट, एक पुस्तक तथा 2100 रुपये इनाम में प्राप्त हुए।

अब मेरा लक्ष्य है कि मैं एक बहुत अच्छी ब्रह्माकुमारी बनकर बहुत सेवा करूँगी। मैंने अपनी बहुत सहेलियों को ज्ञान भी दिया है। अभी तो बाबा मुझसे बहुत सेवाएँ कराएंगे। मैं आपसे भी यही कहना चाहूँगी कि एक बार खुदा को अपना दोस्त बनाकर तो देखो, आपकी जिन्दगी न बदल दे तो कहना।

-- ब्रह्माकुमारी प्राची, राजापार्क, जयपुर (राज.)